हुसैनियत क्या है?

अल्लामा जज़ाएरी आयतुल्लाह मुफ्ती सै तैय्यिब आग़ा साहिब
अनुवादकः मुहम्मद काज़िम मेहदी

किसी ज़ात की तरफ निस्बत देना पिछले ज़माने से चला आ रहा है जिस शख़्स में कोई ख़ुसूसियत और कमाल हो लोग उस से ख़ुद को जोड़ना फख़्र समझते हैं जो बज़ाहिर तीन गिरोह हैंः

1– उस कमाल वाली ज़ात की औलाद
2– उसके कमाल से असर लेने वाले
3– उसकी सीरत पर चलने वाले

हम भी इसका दावा करते हैं कि हम हुसैनियत के अलमबरदार हैं! देखना है कि यह दावा कहाँ तक ठीक है अगर हम ये दावा इसलिए करते हैं कि हम उनकी औलाद हैं तो यह सिर्फ हुसैनी सादात तक हक़ बात है वह भी उस सूरत में कि जब बाप और बेटे के तरीक़े एक जैसे हों वरना अगर यह सूरत हो कि हुसैन (अ0) तो इन्साने कामिल हों और उनकी औलाद अपनी तौर तरीक़े से जानवारों तक को शरमाए तो यक़ीनन ऐसी औलाद से उसके पूर्वजों को तकलीफ होगी और उसका इस गन्दगी से उस पाक व मुक़द्दस ज़ात की तरफ ख़ुद को जोड़ना बहुत बड़ी हटधर्मी समझी जाएगी।

और अगर हमारा हुसैनियत का दावा दूसरी वजह से है यानि हम हुसैन (अ0) के कमाल के मानने वाले हैं और उनकी जाँबाज़ी से मुतास्सिर हैं लेकिन यह एतेराफ व तास्सुर किसी अमल के जज़्बे से ख़ाली है तो फिर माफ कीजियेगा कि इस लेहाज़ से बड़े हसैुनी शिम्र, हुरमला, इब्ने सअ्द, इब्ने ज़ियाद और यज़ीद माने जयेंगे। क्योंकि उन्होंने हुसैन (अ0) के बेमिसाल कारनामे को अपनी आँखों से देखा था हुसैन (अ0) के इरादे और मज़बूती के पहाड़ से ख़ुद टकराए थे इसलिए उन से बढ़कर कमाल व सिबाते हुसैनी का एतेराफ किसको होगा इसी एतेराफ व तास्सुर का नतीजा था कि यज़ीद व सअ्द के लड़के की आँखों से भी आँसू बह निकलते थे। मगर यह आँसू मगरमच्छ के थे। इसलिए आज इन ज़ालिमों को कोई भी हुसैनी नहीं कहता। हुसैन (अ0) की शराफत से खुद शिम्र इतना मुतास्सिर था कि उसने इब्ने साद के ख़ेमे में अपनी ढाल पर हुसैन (अ0) का सर रख कर जब पेश किया तो यह शेर पढ़ा जिसका मतलब हैः

''मेरे दामन को सोने चाँदी से भर दे क्योंकि मैंने लोगों में से सबसे अच्छे इन्सान को मारा है।''

लेकिन उसका यह इक़रार व तास्सुर कोई क़ीमत रखता है? जबकि उसने हुसैन (अ0) के गले पर छुरी चला दी।

अब रहा तीसरा गिरोह वो तो बेशक ख़ुद को हुसैनी कह सकता है वह हुसैनियत का अलम ऊँचा कर सकता है। वह हुसैनियत का तोहफा अपनी सीने पर सजा सकता है लेकिन शर्त यही है कि उसके रोएँ–रोएँ से हुसैनियत की किरनें फूट कर निकल रही हों। उसकी हर बात और उसका हर काम आशूर की दोपहर को चमकने वाले सूरज की किरनों से रौशनी हासिल करे। क्योंकि आशूर के आफताब के चश्मे ने तो यह

देखा कि कर्बला के हुसैनियों ने ठीक दोपहर को अपने ज़ख़्मी हाथों से कर्बला की मिट्टी पर तयम्मुम किया और तलवारों के साये में कर्बला की गर्म ज़मीन पर अपनी पेशानी रख दी आफताब तो अब भी वही है मगर आज कितने हुसैनी हैं जो वक़्त पर नमाज़ पढ़कर हुसैन की सीरत का नमूना बनते हैं?

आशूर के सूरज ने देखा कि हुसैन (अ0) के जाँबाज़ हुसैन के आगे सीना फैलाए थे। तीर आ–आ कर उनके नाजुक सीनों को छलनी कर रहे थे मगर वह मरते दम तक हुसैन (अ0) के आगे से न हटे। आज हुसैन (अ0) तो हमारे सामने नहीं है मगर हुसैनियत ज़रूरत मौजूद है यानि वह अज़ीम मक़सद हमारे सामने है जिसके लिये हुसैन (अ0) ने यह अपनी क़ुर्बानी पेश की। यह मक़सद आज भी ख़तरे में है। इस पर तीर बरसाए जा रहे हैं आज के हुसैनियों में है कोई जवान जो तीरों के सामने सीना तान कर सईद और ज़ुहैर बन जाए। दुनिया जानती है कि जंग में दुश्मन पर ग़ालिब आने के लिये धोका जाएज़ है। इस्लाम ने भी इसकी इजाज़त दी है बल्कि जंग नाम ही धोका दही का है लेकिन क्या कभी तुमने सुना कि कर्बला के हुसैनियों ने भी अपने दुश्मन को धोका दिया उन्होंने अपने मुख़तसर साथियों के बाद भी अपने इस जाएज़ हक़ को इस्तेमाल नहीं किया न धोका दिया न उन पर रात को हमला किया, दुश्मन उनकी पकड़ में आ–आ कर निकल गया। खुद शिम्र ज़ुहैर के निशाने पर आ चुका था और ज़ुहैर के बाज़ू की ज़रा सी हरकत से उसका काम ख़त्म था मगर इमाम (अ0) ने इजाज़त न दी क्योंकि कर्बला के हुसैनी आशूरा के दिन अपने जाएज़ हुक़ूक़ को कम में लाने के लिए नहीं इकटठा हुए थे बल्कि उनका अहम मक़सद तो यह था कि आज हम से वाजिब व मुस्तहब के अलावा कोइ काम ही न होगा। लेकिन आज जब कि धोकादही व ग़द्दारी यक़ीनन हराम है। सगा भाई अपने सगे भाई के धोखे का शिकार है, कर्बला के हुसैनी मरने में एक दूसरे से आगे बढ़ रहे थे। इसलिए नहीं कि वह हंगामे से निकल जाना चाहते थे बल्कि इस लिये कि कहीं वह अपनी आँखों से अपने साथियों का ताज़ा ख़ून न देखें। और आज भाई, भाई के ख़ून का प्यासा है। कर्बला के हुसैनियों ने सारी रात क़ुर्आन की तिलावत में गुज़ारी और जब सुब्ह को जंग शुरु हुई तो कितने हाफिज़ाने क़ुर्आन थे जो तलवारों के साये में झूम–झूम कर क़ुर्आन की तिलावत करते जाते थे और शहादत का जाम पीते जाते थे और आज क़ुर्आन पर यूँ गर्द जमी है जैसे किसी मासूम यतीम का चेहरा गर्द में भरा हुआ हो, कर्बला के हुसैनियों ने इमाम के साथ आशूर की रात जो वादा किया था उसको अपनी जान की बाज़ी लगाकर पूरा किया अगर ज़बान से यह कहा कि ऐ हुसैन (अ0) हम आपके साथ हैं तो फिर साथ रहे और ऐसा साथ रहे कि हुसैन (अ0) की कोई मुसीबत ऐसी नहीं जिसमें उन्होंने साथ न दिया हो, अगर हुसैन (अ0) ने पानी न पिया तो उन्होंने भी नहीं पिया। अगर हुसैन (अ0) भूखे थे तो वह भी भूखे रहे। अगर हुसैन (अ0) ने अपनी आँखों से अपनी औलाद को ख़ून में नहाते हुए देखा तो उन्होंने भी अपने बच्चों का सर जन्नत के जवानों के सरदार के क़दमों पर निछावर किया, अगर हुसैन (अ0) की मुबारक गर्दन को शिम्र के खन्जर ने चूमा तो उनकी ज़िन्दगी की रग भी हुसैन (अ0) की मुहब्बत में काटी गयी। अगर हुसैन (अ0) के अहलेहरम बेपर्दा हुए तो उनकी बीबियाँ भी नंगेसर फिराई गयीं अगर हुसैन (अ0) का सर गली–गली और शहर–शहर फिराया गया तो उनके सरों का काफ़ला भी पीछे

चल रहा था। और आज भी सैकड़ों साल गुज़रने के बाद जिस मुक़द्दस रौज़े में सैयिदुश्शोहदा (अ0) आराम कर रहे हैं वहीं इमाम (अ0) के पैरों से लगे हुए कर्बला के हुसैनी भी सो रहे हैं और कल जब महशर का मैदान गर्म होगा उस वक़्त भी यह हुसैन के साथी हुसैन इब्ने अली (अ0) के साथ–साथ अपनी क़ब्र से कौसर तक और कौसर से जन्नत तक जाएँगे अपना मकान भी ऊँची जन्नत में हुसैनी महल के साथ–साथ बनाएँगे। ''हुसैन (अ0) हम आपके साथ हैं'' कितना अटल फैसला था जिसको न ज़माने की धार काट सकी है न ज़ुल्म के पहाड़ कुचल सके इस फैसले की सख़्ती ने बला के तूफ़ान के धारों का रुख पलट दिया। ज़ुल्म व सितम के पहाड़ों को चकनाचूर कर दिया और अपनी बात न बदली।

अब आइये हम ख़ुद को भी हुसैनी कहते हैं। बल्कि जब ज़ियारत को जाते हैं तो हज़रत सैयिदुश्शोहदा व अबुल फज़लिल अब्बास की ज़रीह सामने यह कहते हैं:

''मैं अपनी ग़ुलामी का और आपकी मुख़ालेफत से न हटने का इक़रार करता हूँ मैं आपके साथ हूँ, आपके साथ हूँ न कि आपके दुश्मनों के साथ।''

यह था दावा लेकिन क़ौल व अमल को तौलते वक़्त अगर यह अफसोसनाक मुक़ाबला सामने आ जाए कि:

1– हुसैन (अ0) सिर्फ अल्लाह से डरते थे

और हम सिर्फ ख़ुदा ही से न डरें और सबसे डरें।

2– हुसैन (अ0) ने मौत की आँखों में आँखें डालकर उसको हराया

और हम ज़िन्दगी की बनावट की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं ताकि जल्द से जल्द हमेशा की बर्बादी हासिल हो सके।

3– हुसैन (अ0) ने अपने इरादे और मज़बूती से बातिल की ताक़तों को कुचल के रख दिया

और हम को हमारी पस्त हिम्मती की वजह से बातिल की ताक़तें कुचल रही हैं।

4– हुसैन ने अपने ख़ून से इस्लाम के पेड़ को सींचा

और हम उस हरे–भरे बाग़ को बर्बाद कर रहे हैं।

5– हुसैन (अ0) ने आख़िरी दम तक किसी वजिब को न छोड़ा

और हमने वाजिब कामों को तीन तलाक़ें दे दी।

6– हुसैन (अ0) ने हमेशा औव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ी

और हम आख़िरे वक़्त पढ़ना अपना तरीक़ा बना लें।

7– हुसैन (अ0) माबूद की याद को अपने सीने से लगाए हुए दुनिया से गये

और हमारा सीना हर वक़्त शैतानी ख़यालों का अड्डा।

8– हुसैन (अ0) के ख़ेमे में तस्बीह और तहलील की आवाज़ें हों

और हमारे घरों में नाच–गानों की आवाज़ें।

9– हुसैन (अ0) के होंठ आख़िर दम तक ख़ुदा के ज़िक्र में तर रहें

और हमारे लबों पर फितने फैलाने वाली गुनगुनाहट, झूठ, ग़ीबत।

10– हुसैन (अ0) की आँखें क़ुर्आनी सतरों का तवाफ करें

और हमारी आँखें गुनाहों के जलवों को तलाश करती हुई।

अगर आज का हुसैनी ऐसा है तो.....................

फरियाद बर ग़रीबी व बेयारिये हुसैन (अ0)

□□□